# Chapter अठारह

# भगवान् वामनदेव : वामन अवतार

इस अध्याय में यह वर्णन हुआ है कि वामनदेव किस तरह प्रकट हुए और वे महाराज बलि की यज्ञशाला में कैसे गये जहाँ उनका स्वागत हुआ और उन्होंने वर देकर कैसे उनकी इच्छा पूरी की।

भगवान् वामनदेव इस जगत में अदिति के गर्भ से शंख, चक्र, गदा तथा कमल धारण किये उत्पन्न हुए। उनका शारीरिक वर्ण साँवला था और वे पीताम्बर पहने थे। भगवान् विष्णु श्रावण द्वादशी के शुभ

अवसर पर जब अभिजित नक्षत्र उदित हो चुका था, प्रकट हुए। उस समय भगवान् के प्राकट्य से तीनों लोकों में अर्थात् उच्च लोकबाह्य लोक तथा पृथ्वीलोक में सभी देवता, गाएँ, ब्राह्मण यहाँ तक कि सारी ऋतुएँ भी प्रसन्न थीं। अतएव यह शुभ दिवस विजया कहलाता है। जब *सच्चिदानन्द* विग्रह भगवान् कश्यप तथा अदिति के पुत्र रूप में प्रकट हुए तो उनके माता पिता दोनों अत्यन्त विस्मित हुए। प्रकट होने के बाद भगवान् ने वामन रूप धारण कर लिया। सारे ऋषियों ने हर्ष प्रकट किया और कश्यपमुनि की उपस्थिति में भगवान् वामन का जन्मोत्सव सम्पन्न किया। उनके यज्ञोपवीत संस्कार के समय सूर्यदेव, बृहस्पति, पृथ्वी की प्रधान देवी, स्वर्गलोकों के देवता, उनकी माता, ब्रह्माजी, कुवेर, सप्तर्षि इत्यादि ने उनका सम्मान किया। तब भगवान् वामनदेव नर्मदा नदी के उत्तरी तट पर स्थित उस यज्ञस्थल पर गये जो भृगुकच्छ कहलाता है जहाँ भृगुवंशी ब्राह्मण यज्ञ कर रहे थे। भगवान् वामनदेव मूंज की मेखला, मृगछाला तथा जनेऊ पहने और हाथ में दण्ड, छत्र तथा कमण्डलु लिए महाराज बलि की यज्ञशाला में प्रकट हुए। उनके दिव्य तेज से सारे पुरोहितों का तेज घट गया और उन्होंने अपने-अपने आसनों से खड़े होकर भगवान् वामनदेव की स्तुति की। शिवजी भी भगवान् वामनदेव के अँगूठे से निकले गंगाजल को अपने सिर पर धारण करते हैं अतएव बलि महाराज ने भगवान् वामनदेव के चरण धोकर अपने सिर पर चढ़ाया और यह अनुभव किया कि वे और उनके पूर्वज इससे महिमामण्डित हुए थे। तब बलि महाराज ने वामनदेव की कुशलता पूछी और उनसे प्रार्थना की कि वे धन, रत्न या जो भी इच्छा हो, माँगें।

**श्रीशुक उवाच**

**इत्थं विरिञ्चस्तुतकर्मवीर्यः**
**प्रादुर्बभूवामृतभूरदित्याम् ।**
**चतुर्भुजः शङ्खगदाब्जचक्रः**
**पिशङ्गवासा नलिनायतेक्षणः ॥ १ ॥**

**शब्दार्थ**

श्री-शुकः उवाच—श्री शुकदेव गोस्वामी ने कहा; इत्थम्—इस तरह से; विरिञ्च-स्तुत-कर्म-वीर्यः—भगवान्, जिनके कार्यों एवं पराक्रम की प्रशंसा ब्रह्माजी भी करते हैं; प्रादुर्बभूव—प्रकट हुए; अमृत-भूः—जिनका प्राकट्य सदैव मृत्युरहित होता है; अदित्याम्—अदिति के गर्भ से; चतुः-भुजः—चार भुजाओं वाले; शङ्ख-गदा-अब्ज-चक्रः—शंख, गदा, कमल तथा चक्र से सुशोभित; पिशङ्ग-वासाः—पीताम्बर धारण किये; नलिन-आयत-ईक्षणः—कमल की पंखड़ियों के समान खिली हुई आँखों वाले।

**शुकदेव गोस्वामी ने कहा : जब ब्रह्माजी इस प्रकार भगवान् के कार्यों एवं पराक्रम का**

**यशोगान कर चुके तो भगवान् जिनकी एक सामान्य जीव की भान्ति कभी मृत्यु नहीं होती, अदिति के गर्भ से प्रकट हुए। उनके चार हाथ शंख, चक्र, गदा तथा पद्म से सुशोभित थे। वे पीताम्बर धारण किये हुए थे और उनकी आँखें खिले हुए कमल की पंखड़ियों जैसी प्रतीत हो रही थीं।**

**तात्पर्य :** इस श्लोक में *अमृत-भू:* शब्द महत्त्वपूर्ण है। कभी-कभी भगवान् सामान्य बालक की भाँति जन्म लेकर प्रकट होते हैं, किन्तु इसका यह अर्थ नहीं होता कि वे जन्म, मृत्यु या बुढ़ापे से प्रभावित होते हैं। भगवान् के अवतारों के प्राकट्य तथा उनके कार्यकलापों के विषय में समझने के लिए बहुत बुद्धिमानी चाहिए। इसकी पुष्टि *भगवद्गीता* (४.९) में हुई है—*जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वत:।* मनुष्य को यह समझने का प्रयत्न करना चाहिए कि भगवान् का प्राकट्य तथा तिरोभाव एवं उनके कार्यकलाप *दिव्य* होते हैं। भगवान् को भौतिक कार्यकलापों से कोई सरोकार नहीं होता। जो कोई भगवान् के प्राकट्य, तिरोधान तथा कार्यकलापों को समझता है, वह तुरन्त मुक्त हो जाता है। इस शरीर को छोड़ने पर उसे फिर से भौतिक शरीर कभी नहीं धारण करना पड़ता अपितु वह सीधे स्वर्ग को चला जाता है (*त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन*)।

**श्यामावदातो झषराजकुण्डल-**
**त्विषोल्लसच्छ्रीवदनाम्बुज: पुमान् ।**
**श्रीवत्सवक्षा बलयाङ्गदोल्लस-**
**त्किरीटकाञ्चीगुणचारुनूपुर: ॥ २ ॥**

### शब्दार्थ

श्याम-अवदात:—जिनका शरीर साँवला है और उन्माद से मुक्त है; झष-राज-कुण्डल—मगर के आकार के कुण्डल; त्विषा—कान्ति से; उल्लसत्—चमचमाते; श्री-वदन-अम्बुज:—सुन्दर कमल जैसे मुखमण्डल वाले; पुमान्—परम पुरुष; श्रीवत्स-वक्षा:—जिनके वक्षस्थल पर श्रीवत्स चिह्न है; बलय—कड़े; अङ्गद—बाजूबंद; उल्लसत्—चमचमाते; किरीट—मुकुट; काञ्ची—करधनी; गुण—जनेऊ; चारु—सुन्दर; नूपुर:—पायल।.

**भगवान् का शरीर साँवले रंग का था और समस्त उन्मादों से मुक्त था। उनका कमलमुख मकराकृति जैसे कान के कुण्डलों से सुशोभित होकर अत्यन्त सुन्दर लग रहा था और उनके वक्षस्थल पर श्रीवत्स का चिह्न था। वे कलाइयों में कंगन पहने थे, अपनी भुजाओं में बाजूबंद पहने थे, सिर पर मुकुट लगाये थे, उनकी कमर में करधनी थी, छाती पर जनेऊ पड़ा था और उनके चरणकमलों को पायल सुशोभित कर रही थीं।**

मधुव्रतव्रातविघुष्टया स्वया
विराजितः श्रीवनमालया हरिः ।
प्रजापतेर्वेश्मतमः स्वरोचिषा
विनाशयन्कण्ठनिविष्टकौस्तुभः ॥ ३ ॥

### शब्दार्थ

मधु-व्रत—शहद के लिए दीवानी मधुमक्खियों का; व्रात—समूह; विघुष्टया—गुंजार करते; स्वया—असामान्य; विराजितः—स्थित; श्री—सुन्दर; वन-मालया—फूलों की माला से; हरिः—भगवान्; प्रजापतेः—प्रजापति कश्यपमुनि का; वेश्म-तमः—घर का अंधकार; स्व-रोचिषा—अपने तेज से; विनाशयन्—नष्ट करते हुए; कण्ठ—गले में; निविष्ट—पहना हुआ; कौस्तुभः—कौस्तुभ मणि।

उनके वक्षस्थल पर सुन्दर फूलों असाधारण की माला सुशोभित थी और फूलों के अत्यधिक सुगन्धित होने से मधुमक्खियों का बड़ा सा समूह गुंजार करता हुआ शहद के लिए उन पर टूट पड़ा था। जब भगवान् अपने गले में कौस्तुभ मणि पहन कर प्रकट हुए तो उनके तेज से प्रजापति कश्यप के घर का अंधकार दूर हो गया।

दिशः प्रसेदुः सलिलाशयास्तदा
प्रजाः प्रहृष्टा ऋतवो गुणान्विताः ।
द्यौरन्तरीक्षं क्षितिरग्निजिह्वा
गावो द्विजाः सञ्जहृषुर्नगाश्च ॥ ४ ॥

### शब्दार्थ

दिशः—सारी दिशाएँ; प्रसेदुः—प्रसन्न हो उठीं; सलिल—जल के; आशयाः—आगार; तदा—उस समय; प्रजाः—सारे जीव; प्रहृष्टाः—अत्यन्त प्रसन्न; ऋतवः—सारी ऋतुएँ; गुण-अन्विताः—अपने-अपने गुणों से पूर्ण; द्यौः—ऊपरी लोक; अन्तरीक्षम्—बाह्य आकाश; क्षितिः—पृथ्वी; अग्नि-जिह्वाः—देवतागण; गावः—गौवें; द्विजाः—ब्राह्मणगण; सञ्जहृषुः—सभी प्रसन्न हो गये; नगाः च—तथा पर्वत।

उस समय सभी दिशाओं में, नदी तथा सागर जैसे जलागारों में तथा सब के हृदयों में प्रसन्नता व्याप्त हो गई। विभिन्न ऋतुएँ अपने-अपने गुण दिखलाने लगीं तथा उच्चलोक, बाह्य आकाश एवं पृथ्वी पर के सारे जीव हर्षित हो उठे। देवता, गाएँ, ब्राह्मण तथा सारे पर्वत हर्ष से पूरित हो गए।

श्रोणायां श्रवणद्वादश्यां मुहूर्तेऽभिजिति प्रभुः ।
सर्वे नक्षत्रताराद्याश्चक्रुस्तज्जन्म दक्षिणम् ॥ ५ ॥

### शब्दार्थ

श्रोणायाम्—जब चन्द्रमा श्रवण नक्षत्र पर था; श्रवण-द्वादश्याम्—भाद्र मास के शुक्लपक्ष की द्वादशी को, जो श्रवण-द्वादशी कहलाती हैं; मुहूर्ते—शुभ क्षण में; अभिजिति—अभिजित नक्षत्र में, जो श्रवण राशि का पूर्वार्द्ध है तथा अभिजित मुहूर्त में (मध्यान्ह के समय); प्रभुः—भगवान्; सर्वे—सभी; नक्षत्र—तारे; तारा—लोक; आद्याः—सूर्य आदि लोक; चक्रुः—बनाया; तत्-जन्म—भगवान् का जन्म दिन; दक्षिणम्—अत्यन्त भव्य।

**श्रवण-द्वादशी के दिन जब चन्द्रमा श्रवण राशि पर था और शुभ अभिजित मुहूर्त था, भगवान् इस ब्रह्माण्ड में प्रकट हुए। भगवान् के प्राकट्य को अत्यन्त शुभ मानकर सूर्य से लेकर शनि इत्यादि समस्त तारे तथा ग्रह अत्यन्त दानी बन गये।**

**तात्पर्य :** निपुण ज्योतिषी श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर ने *नक्षत्र-ताराद्याः* शब्द की व्याख्या की है। *नक्षत्र* का अर्थ है 'तारे' और इस प्रसंग में *तारा* का अर्थ 'लोक' या 'ग्रह' है एवं *आद्याः* का अर्थ है, वह जिसका वर्णन सर्वप्रथम हुआ है। तारों (ग्रहों) में पहला ग्रह सूर्य है चन्द्रमा नहीं। अतएव वैदिक कथन के अनुसार आधुनिक ज्योतिर्विद की यह मान्यता कि चन्द्रमा पृथ्वी के सबसे निकट है स्वीकार नहीं की जानी चाहिए। जिस क्रम में विश्वभर के लोग सप्ताह के दिनों के नाम लेते हैं—रविवार, सोमवार, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र तथा शनिवार—वस्तुत: वह वेदों के अनुसार लोकों का क्रम ही है और इस कथन से वेदों की पुष्टि होती है। इसके अलावा जब भगवान् का प्रादुर्भाव हुआ तो ज्योतिष गणना के अनुसार तारे तथा ग्रह भगवान् के जन्म को मनाने के लिए अत्यन्त शुभ स्थान पर आ गये।

**द्वादश्यां सवितातिष्ठन्मध्यन्दिनगतो नृप ।**
**विजयानाम सा प्रोक्ता यस्यां जन्म विदुर्हरेः ॥ ६ ॥**

### शब्दार्थ

द्वादश्याम्—द्वादशी के दिन; सविता—सूर्य; अतिष्ठत्—स्थित था; मध्यम्-दिन-गतः—आकाश के मध्य भाग में; नृप—हे राजा; विजया-नाम—विजया नामक; सा—वह दिन; प्रोक्ता—कहा जाता है; यस्याम्—जिसमें; जन्म—प्रादुर्भाव; विदुः—वे जानते हैं; हरेः—भगवान् हरि का।

**हे राजा! द्वादशी के दिन जब भगवान् प्रकट हुए तो सूर्य मध्य आकाश में था, जैसा कि प्रत्येक विद्वान को पता है। यह द्वादशी विजया कहलाती है।**

**शङ्खदुन्दुभयो नेदुर्मृदङ्गपणवानकाः ।**
**चित्रवादित्रतूर्याणां निर्घोषस्तुमुलोऽभवत् ॥ ७ ॥**

### शब्दार्थ

शङ्ख—शंख; दुन्दुभय:—दुन्दुभी नामक वाद्य; नेदु:—बजने लगे; मृदङ्ग—ढोल; पणव-आनका:—पणव तथा आनक नाम के ढोल; चित्र—विविध; वादित्र—संगीत ध्वनि; तूर्याणाम्—तथा अन्य वाद्ययंत्रों ( तुरहियों ) का; निर्घोष:—उच्चस्वर; तुमुल:—अत्यन्त कोलाहलपूर्ण; अभवत्—हो गया।.

**शंख, ढोल, मृदंग, पणव तथा आनक बजने लगे। इन तथा अन्य विविध वाद्ययंत्रों की ध्वनि अत्यन्त कोलाहलपूर्ण थी।**

प्रीताश्चाप्सरसोऽनृत्यन्गन्धर्वप्रवरा जगु: ।
तुष्टुवुर्मुनयो देवा मनव: पितरोऽग्नय: ॥ ८ ॥

### शब्दार्थ

प्रीता:—अत्यन्त प्रसन्न होकर; च—भी; अप्सरस:—अप्सराएँ; अनृत्यन्—नाचने लगीं; गन्धर्व-प्रवरा:—श्रेष्ठ गन्धर्व गण; जगु:—गाने लगे; तुष्टुवु:—स्तुतियों द्वारा भगवान् को हर्षित किया; मुनय:—मुनियों ने; देवा:—देवताओं ने; मनव:—मनुओं ने; पितर:—पितृलोक के वासियों ने; अग्नय:—अग्नि देवताओं ने।.

**अत्यधिक हर्षित होकर अप्सराएँ प्रसन्नता के मारे नाचने लगीं, श्रेष्ठ गन्धर्व गाने लगे और महा-मुनि, देवता, मनु, पितरगण तथा अग्निदेवों ने भगवान् को प्रसन्न करने के लिए स्तुतियाँ कीं।**

सिद्धविद्याधरगणा: सकिम्पुरुषकिन्नरा: ।
चारणा यक्षरक्षांसि सुपर्णा भुजगोत्तमा: ॥ ९ ॥
गायन्तोऽतिप्रशंसन्तो नृत्यन्तो विबुधानुगा: ।
अदित्या आश्रमपदं कुसुमै: समवाकिरन् ॥ १० ॥

### शब्दार्थ

सिद्ध—सिद्धलोक के वासी; विद्याधर-गणा:—विद्याधर लोक के वासी; स—सहित; किम्पुरुष—किम्पुरुष लोक के वासी; किन्नरा:—किन्नर लोक के निवासी; चारणा:—चारणलोक के वासी; यक्ष—यक्षगण; रक्षांसि—राक्षसगण; सुपर्णा:—सुपर्ण; भुजग-उत्तमा:—सर्पलोक के निवासियों में श्रेष्ठ; गायन्त:—भगवान् का यशोगान करते; अति-प्रशंसन्त:—भगवान् की प्रशंसा करते; नृत्यन्त:—नाचते हुए; विबुधानुगा:—देवताओं के अनुयायी; अदित्या:—अदिति के; आश्रम-पदम्—निवास स्थान; कुसुमै:—फूलों से; समवाकिरन्—ढका हुआ।.

**सिद्ध, विद्याधर, किम्पुरुष, किन्नर, चारण, यक्ष, राक्षस, सुपर्ण, सर्पलोक के सर्वश्रेष्ठ निवासी तथा देवताओं के अनुयायी—इन सबों ने भगवान् का यशोगान तथा प्रशंसा करते हुए एवं नृत्य करते हुए अदिति के निवास स्थान पर इतने फूल बरसाये कि उनका पूरा घर ढक गया।**

दृष्ट्वादितिस्तं निजगर्भसम्भवं
परं पुमांसं मुदमाप विस्मिता ।
गृहीतदेहं निजयोगमायया

**प्रजापतिश्चाह जयेति विस्मितः ॥ ११ ॥**

### शब्दार्थ

दृष्ट्वा—देखकर; अदितिः—माता अदिति ने; तम्—उसको ( भगवान् को ); निज-गर्भ-सम्भवम्—अपने गर्भ से उत्पन्न; परम्—परम; पुमांसम्—पुरुष को; मुदम्—परम सुख; आप—उत्पन्न किया; विस्मिता—अत्यन्त चकित; गृहीत—स्वीकार किया; देहम्—शरीर या दिव्य रूप; निज-योग-मायया—अपनी आध्यात्मिक शक्ति से; प्रजापतिः—कश्यपमुनि ने; च—भी; आह—कहा; जय—जय हो; इति—इस प्रकार; विस्मितः—आश्चर्यचकित होकर।

**जब अदिति ने देखा कि भगवान् ने जो उनके अपने गर्भ से उत्पन्न हुए थे अपनी आध्यात्मिक शक्ति से दिव्य शरीर धारण कर लिया है, तो वे आश्चर्यचकित हो उठीं और अत्यन्त प्रसन्न हुईं। उस बालक को देखकर प्रजापति कश्यप परम सुख एवं आश्चर्य के वशीभूत होकर जय! जय! की ध्वनि करने लगे।**

**यत्तद्वपुर्भाति विभूषणायुधै-**
**रव्यक्तचिद्व्यक्तमधारयद्धरिः ।**
**बभूव तेनैव स वामनो वटुः**
**सम्पश्यतोर्दिव्यगतिर्यथा नटः ॥ १२ ॥**

### शब्दार्थ

यत्—जो; तत्—वही; वपुः—दिव्य शरीर; भाति—दिखलाता है; विभूषण—आभूषणों; आयुधैः—तथा हथियारों समेत; अव्यक्त—अप्रकट; चित्-व्यक्तम्—आध्यात्मिक रूप से प्रकट; अधारयत्—धारण कर लिया; हरिः—भगवान् ने; बभूव—तुरन्त बन गया; तेन—उससे; एव—निश्चय ही; सः—भगवान्; वामनः—बौना; वटुः—ब्राह्मण ब्रह्मचारी; सम्पश्यतोः—अपने माता-पिता के देखते-देखते; दिव्य-गतिः—अलौकिक गतियों वाला; यथा—जिस तरह; नटः—नट, अभिनेता।

**भगवान् अपने आदि रूप में आभूषण पहने तथा हाथ में आयुध धारण किये प्रकट हुए। यद्यपि उनका यह सदैव विद्यमान रहने वाला रूप भौतिक जगत में दृश्य नहीं है, तो भी वे इसी रूप में प्रकट हुए। तत्पश्चात् अपने माता-पिता की उपस्थिति में ही उन्होंने उसी तरह ब्राह्मण वामन अर्थात् ब्रह्मचारी का रूप धारण कर लिया जिस तरह कोई अभिनेता कर लेता है।**

**तात्पर्य :** यहाँ पर *नटः* शब्द महत्त्वपूर्ण है। एक अभिनेता, एक ही व्यक्ति होते हुए भी विभिन्न अभिनय करने के लिए वेश बदलता रहता है। इसी प्रकार भगवान् भी लाखों रूप बदलते रहते हैं जैसाकि *ब्रह्मसंहिता* (५.३३,३९) में कहा गया है (*अद्वैतम् अच्युतम् अनादिम् अनन्तरूपमाद्यं पुराणपुरुषम्* )। वे अपने असंख्य अवतारों समेत सदैव विद्यमान रहते हैं ( *रामादि मूर्तिषु कलानियमेन तिष्ठन् नानावतारमकरोद् भुवनेषु किन्तु*)। यद्यपि वे नाना अवतारों में प्रकट होते हैं, किन्तु वे एक दूसरे से भिन्न नहीं होते। वे वही व्यक्ति रहते हैं—उसी शक्ति, उसी नित्यता एवं उसी दिव्य अस्तित्व के

साथ—किन्तु वे एक ही साथ विभिन्न रूप धारण कर सकते हैं। जब वामनदेव अपनी माता के गर्भ से उत्पन्न हुए तो वे नारायण के रूप में थे जिनके चारों हाथों में आवश्यक प्रतीकात्मक आयुध थे, किन्तु तुरन्त ही उन्होंने अपने को ब्रह्मचारी (वटु) के रूप में बदल लिया। इसका अर्थ यह हुआ कि उनका शरीर भौतिक नहीं है। जो यह सोचता है कि परमेश्वर भौतिक शरीर धारण करते हैं वह बुद्धिमान् नहीं है। उसे भगवान् के रूप के विषय में अधिक जानने की आवश्यकता है। जैसी कि *भगवद्गीता* (४.९) में पुष्टि हुई है—*जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वत:।* भगवान् द्वारा आदि दिव्य शरीर में (सच्चिदानन्द विग्रह) दिव्य अवतार लेने के विषय में समझने की आवश्यकता है।

**तं वटुं वामनं दृष्ट्वा मोदमाना महर्षय: ।**
**कर्माणि कारयामासु: पुरस्कृत्य प्रजापतिम् ॥ १३ ॥**

### शब्दार्थ

तम्—उस; वटुम्—ब्रह्मचारी को; वामनम्—बौने; दृष्ट्वा—देखकर; मोदमाना:—प्रसन्न मुद्रा में; महा-ऋषय:—महर्षियों ने; कर्माणि—अनुष्ठानों को; कारयाम् आसु:—सम्पन्न किया; पुरस्कृत्य—आगे करके; प्रजापतिम्—प्रजापति कश्यपमुनि को।.

**जब ऋषियों ने भगवान् को ब्रह्मचारी वामन के रूप में देखा तो वे निश्चय ही परम प्रसन्न हुए। अतएव प्रजापति कश्यपमुनि को आगे करके उन्होंने सारे अनुष्ठान—यथा जन्म संस्कार—सम्पन्न किये।**

**तात्पर्य :** वैदिक सभ्यता के अनुसार जब किसी ब्राह्मण परिवार में कोई सन्तान उत्पन्न होती है, तो सर्वप्रथम *जातकर्म* अर्थात् जन्म-संस्कार सम्पन्न किया जाता है और उसके बाद अन्य अनुष्ठान भी क्रमश: संपन्न कर लिए जाते हैं। किन्तु जब *ब्रह्मचारी* के रूप में यह *वामन रूप* प्रकट हुआ तो उसका उपवीत संस्कार भी तुरन्त ही सम्पन्न कर दिया गया।

**तस्योपनीयमानस्य सावित्रीं सविताब्रवीत् ।**
**बृहस्पतिर्ब्रह्मसूत्रं मेखलां कश्यपोऽददात् ॥ १४ ॥**

### शब्दार्थ

तस्य—भगवान् वामनदेव का; उपनीयमानस्य—उपवीत संस्कार के समय; सावित्रीम्—गायत्री मंत्र का; सविता—सूर्यदेव ने; अब्रवीत्—उच्चारण किया; बृहस्पति:—देवताओं के गुरु बृहस्पति; ब्रह्म-सूत्रम्—उपवीत, यज्ञोपवीत; मेखलाम्—मूँज की पेटी; कश्यप:—कश्यप मुनि ने; अददात्—प्रदान की।.

**वामनदेव के यज्ञोपवीत संस्कार के समय सूर्यदेव ने स्वयं गायत्री मंत्र का जप किया, बृहस्पति ने जनेऊ प्रदान किया और कश्यप मुनि ने मूँज की मेखला भेंट की।**

ददौ कृष्णाजिनं भूमिर्दण्डं सोमो वनस्पतिः ।
कौपीनाच्छादनं माता द्यौश्छत्रं जगतः पतेः ॥ १५ ॥

### शब्दार्थ

ददौ—दिया, भेंट किया; कृष्ण-अजिनम्—मृगछाला; भूमिः—माता पृथ्वी ने; दण्डम्—ब्रह्मचारी का डंडा; सोमः—चन्द्रदेव ने; वनः-पतिः—जंगल का राजा; कौपीन—लंगोट; आच्छादनम्—शरीर को ढकने वाला; माता—उनकी माता अदिति ने; द्यौः—स्वर्गलोक; छत्रम्—छाता; जगतः—सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के; पतेः—स्वामी का।

माता पृथ्वी ने उन्हें मृगचर्म प्रदान किया तथा वनस्पतियों के राजा चन्द्रदेव ने उन्हें ब्रह्मदण्ड (ब्रह्मचारी का डंडा) प्रदान किया। उनकी माता अदिति ने उन्हें कौपीन के लिए वस्त्र तथा स्वर्गलोक के अधिनायक देवता ने उन्हें छत्र प्रदान किया।

कमण्डलुं वेदगर्भः कुशान्सप्तर्षयो ददुः ।
अक्षमालां महाराज सरस्वत्यव्ययात्मनः ॥ १६ ॥

### शब्दार्थ

कमण्डलुम्—कमण्डल, जलपात्र; वेद-गर्भः—ब्रह्माजी ने; कुशान्—कुशा; सप्त-ऋषयः—सप्तर्षियों ने; ददुः—भेंट किया; अक्ष-मालाम्—रुद्राक्ष की माला; महाराज—हे राजा; सरस्वती—देवी सरस्वती ने; अव्यय-आत्मनः—भगवान् को।

हे राजा! ब्रह्माजी ने अव्यय भगवान् को कमण्डल प्रदान किया, सप्तर्षियों ने कुशा और माता सरस्वती ने उन्हें रुद्राक्ष की माला भेंट की।

तस्मा इत्युपनीताय यक्षराट्पात्रिकामदात् ।
भिक्षां भगवती साक्षादुमादादम्बिका सती ॥ १७ ॥

### शब्दार्थ

तस्मै—उनको (वामनदेव को); इति—इस प्रकार; उपनीताय—जिनका उपवीत संस्कार हो चुका है; यक्ष-राट्—स्वर्ग के कोषाध्यक्ष तथा यक्षों के राजा कुवेर ने; पात्रिकाम्—भिक्षापात्र; अदात्—दिया; भिक्षाम्—भिक्षा के लिए; भगवती—शिव पत्नी, माता भवानी ने; साक्षात्—प्रत्यक्ष; उमा—उमा; अदात्—दिया; अम्बिका—ब्रह्माण्ड की जननी; सती—सती साध्वी।

जब इस प्रकार से वामन देव का यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न हो चुका तो यक्षराज कुवेर ने उन्हें भिक्षा माँगने के लिए भिक्षापात्र एवं शिव पत्नी, ब्रह्माण्ड की परम साध्वी, माता भगवती ने उन्हें पहली भिक्षा दी।

स ब्रह्मवर्चसेनैवं सभां सम्भावितो वटुः ।
ब्रह्मर्षिगणसञ्जुष्टामत्यरोचत मारिषः ॥ १८ ॥

### शब्दार्थ

सः—वह ( वामनदेव ); ब्रह्म-वर्चसेन—अपने ब्रह्म-तेज से; एवम्—इस प्रकार; सभाम्—सभा में; सम्भावितः—हर एक के द्वारा समादरित; वटुः—ब्रह्मचारी; ब्रह्म-ऋषि-गण-सञ्जुष्टाम्—ब्राह्मण ऋषियों से पूरित; अति-अरोचत—सबको मात कर रहा था, सुन्दर लगता था; मारिषः—ब्रह्मचारियों में सर्वश्रेष्ठ।

**इस प्रकार सब के द्वारा स्वागत किये जाने पर ब्रह्मचारियों में श्रेष्ठ वामनदेव ने अपना ब्रह्मतेज प्रकट किया। इस तरह महान् सन्त ब्राह्मणों की उस पूरी सभा में वे अपनी सुन्दरता में अद्वितीय लगते थे।**

**समिद्धमाहितं वह्निं कृत्वा परिसमूहनम् ।**
**परिस्तीर्य समभ्यर्च्य समिद्भिरजुहोद्‌द्विजः ॥ १९ ॥**

### शब्दार्थ

समिद्धम्—प्रज्वलित; आहितम्—स्थित; वह्निम्—अग्नि; कृत्वा—करके; परिसमूहनम्—समुचित रीति से; परिस्तीर्य—सब से बढ़कर; समभ्यर्च्य—पूजा करके; समिद्भिः—आहुतियों के द्वारा; अजुहोत्—यज्ञ सम्पन्न किया; द्विजः—ब्राह्मण श्रेष्ठ।

**तत्पश्चात् श्री वामनदेव ने यज्ञ-अग्नि प्रज्वलित की, पूजा सम्पन्न की और यज्ञशाला में यज्ञ किया।**

**श्रुत्वाश्वमेधैर्यजमानमूर्जितं**
**बलिं भृगूणामुपकल्पितैस्ततः ।**
**जगाम तत्राखिलसारसम्भृतो**
**भारेण गां सन्नमयन्पदे पदे ॥ २० ॥**

### शब्दार्थ

श्रुत्वा—सुनकर; अश्वमेधैः—अश्वमेध यज्ञ द्वारा; यजमानम्—यज्ञकर्ता; ऊर्जितम्—अत्यन्त तेजस्वी; बलिम्—बलि महाराज को; भृगूणाम्—भृगुवंशी ब्राह्मणों के निर्देशन में; उपकल्पितैः—सम्पन्न किया गया; ततः—उस स्थान से; जगाम—चला गया; तत्र—वहाँ; अखिल-सार-सम्भृतः—समस्त सृष्टि के सार भगवान्; भारेण—भार से; गाम्—पृथ्वी को; सन्नमयन्—दबाते हुए; पदे पदे—प्रत्येक पग में।

**जब भगवान् ने सुना कि बलि महाराज भृगुवंशी ब्राह्मणों के संरक्षण में अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न कर रहे हैं, तो वे परमपूर्ण भगवान् बलि महाराज पर अपनी कृपा दिखाने के लिए वहाँ के लिए चल पड़े। प्रत्येक डग भरने पर उनके भार से पृथ्वी नीचे धँसने लगी।**

**तात्पर्य :** भगवान् *अखिल-सार-सम्भृत* हैं अर्थात् इस जगत में जो भी आवश्यक वस्तु है वे उसके स्वामी हैं। इस तरह यद्यपि वे बलि महाराज के पास भिक्षा माँगने जा रहे थे, किन्तु वे सदैव पूर्ण हैं और उन्हें किसी से कुछ भी नहीं माँगना होता है। निस्सन्देह, वे इतने शक्तिमान हैं कि अपने तेज के कारण वे प्रत्येक डग से पृथ्वी की सतह को दबा रहे थे।

तं नर्मदायास्तट उत्तरे बले-
र्य ऋत्विजस्ते भृगुकच्छसंज्ञके ।
प्रवर्तयन्तो भृगवः क्रतूत्तमं
व्यचक्षतारादुदितं यथा रविम् ॥ २१ ॥

### शब्दार्थ

तम्—उसको ( वामनदेव को ); नर्मदायाः—नर्मदा नदी के; तटे—किनारे पर; उत्तरे—उत्तरी; बलेः—महाराज बलि का; ये—जो; ऋत्विजः—अनुष्ठान में लगे पुरोहितगण; ते—वे सभी; भृगुकच्छ-संज्ञके—भृगुकक्ष नामक क्षेत्र में; प्रवर्तयन्तः—सम्पन्न करते हुए; भृगवः—सारे भृगुवंशी; क्रतु-उत्तमम्—अश्वमेध नामक महत्त्वपूर्ण यज्ञ; व्यचक्षत—देखा; आरात्—पास ही; उदितम्—उदय हुए; यथा—जिस तरह; रविम्—सूर्य को।

**नर्मदा नदी के उत्तरी तट पर भृगुकक्ष नामक क्षेत्र में यज्ञ सम्पन्न करते हुए भृगुवंशी ब्राह्मण पुरोहितों ने वामनदेव को ऐसे देखा मानो पास ही सूर्य उदय हो रहा हो।**

ते ऋत्विजो यजमानः सदस्या
हतत्विषो वामनतेजसा नृप ।
सूर्यः किलायात्युत वा विभावसुः
सनत्कुमारोऽथ दिदृक्षया क्रतोः ॥ २२ ॥

### शब्दार्थ

ते—वे सभी; ऋत्विजः—पुरोहितगण; यजमानः—यज्ञ सम्पन्न कराने में व्यस्त बलि महाराज भी; सदस्याः—सभा के सारे सदस्य; हत-त्विषः—तेजरहित; वामन-तेजसा—वामन के चमकीले तेज से; नृप—हे राजा; सूर्यः—सूर्य; किल—कहीं तो; आयाति—आ रहा है; उत वा—अथवा; विभावसुः—अग्निदेव; सनत्-कुमारः—सनत्कुमार; अथ—अथवा; दिदृक्षया—देखने की इच्छा से; क्रतोः—यज्ञ।

**हे राजा! वामनदेव के चमकीले तेज से बलि महाराज एवं सभा के सारे सदस्यों सहित सारे पुरोहित तेजहीन हो गये। वे परस्पर पूछने लगे कि कहीं साक्षात् सूर्यदेव अथवा सनत्कुमार या अग्निदेव तो यज्ञोत्सव को देखने नहीं आ गये?**

इत्थं सशिष्येषु भृगुष्वनेकधा
वितर्क्यमाणो भगवान्स वामनः ।
छत्रं सदण्डं सजलं कमण्डलुं
विवेश बिभ्रद्धयमेधवाटम् ॥ २३ ॥

### शब्दार्थ

इत्थम्—इस प्रकार; स-शिष्येषु—अपने शिष्यों सहित; भृगुषु—भृगुओं के बीच; अनेकधा—अनेक प्रकार से; वितर्क्यमाणः—तर्क-वितर्क करते; भगवान्—भगवान्; सः—वह; वामनः—वामन; छत्रम्—छाता; सदण्डम्—लाठी ( दंड ) सहित; स-जलम्—जल से पूरित; कमण्डलुम्—कमण्डल; विवेश—प्रवेश किया; बिभ्रत्—हाथ में लिए; हयमेध—अश्वमेध यज्ञ की; वाटम्—शाला में।

जब भृगुवंशी पुरोहित तथा उनके शिष्य अनेक प्रकार के तर्क-वितर्कों में संलग्न थे उसी समय भगवान् वामनदेव हाथों में दण्ड, छाता तथा जल से भरा कमण्डल लिए अश्वमेध यज्ञशाला में प्रविष्ट हुए।

मौञ्ज्या मेखलया वीतमुपवीताजिनोत्तरम् ।
जटिलं वामनं विप्रं मायामाणवकं हरिम् ॥ २४॥
प्रविष्टं वीक्ष्य भृगवः सशिष्यास्ते सहाग्निभिः ।
प्रत्यगृह्णन्समुत्थाय सङ्क्षिप्तास्तस्य तेजसा ॥ २५ ॥

### शब्दार्थ

मौञ्ज्या—मूँज की बनी; मेखलया—पेटी से; वीतम्—घिरा हुआ; उपवीत—जनेऊ; अजिन-उत्तरम्—मृगचर्म का उत्तरीय वस्त्र पहने हुए; जटिलम्—जटा धारण किये; वामनम्—वामन को; विप्रम्—ब्राह्मण; माया-माणवकम्—मनुष्य का मायावीपुत्र; हरिम्—भगवान् को; प्रविष्टम्—प्रवेश किया हुआ; वीक्ष्य—देखकर; भृगवः—सारे भृगुवंशी पुरोहित; स-शिष्याः—अपने शिष्यों समेत; ते—वे सभी; सह-अग्निभिः—यज्ञ अग्नि सहित; प्रत्यगृह्णन्—ठीक से स्वागत किया गया; समुत्थाय—खड़े होकर; सङ्क्षिप्ताः—घटा हुआ; तस्य—उसके; तेजसा—तेज से।.

भगवान् वामनदेव मूँज की मेखला, जनेऊ, मृगचर्म का उत्तरीय वस्त्र तथा जटाजूट धारण किये हुए ब्राह्मण बालक के रूप में उस यज्ञशाला में प्रविष्ट हुए। उनके तेज से सारे पुरोहितों एवं उनके शिष्यों का तेज घट गया; वे अपने-अपने आसनों से उठ खड़े हुए और प्रणाम करते हुए सबों ने समुचित रीति से उनका स्वागत किया।

यजमानः प्रमुदितो दर्शनीयं मनोरमम् ।
रूपानुरूपावयवं तस्मा आसनमाहरत् ॥ २६ ॥

### शब्दार्थ

यजमानः—बलि महाराज, जिन्होंने सारे पुरोहितों को यज्ञ सम्पन्न करने के लिए लगा रखा था; प्रमुदितः—अत्यन्त प्रसन्न होकर; दर्शनीयम्—देखने में सुहावना; मनोरमम्—इतना सुन्दर; रूप—सौन्दर्य से युक्त; अनुरूप—उनके शारीरिक सौन्दर्य के तुल्य; अवयवम्—शरीर के विभिन्न अंग; तस्मै—उनको; आसनम्—बैठने का स्थान; आहरत्—प्रदान किया।.

भगवान् वामनदेव को देखकर परम प्रफुल्लित बलि महाराज ने परम प्रसन्नतापूर्वक उन्हें बैठने के लिए आसन प्रदान किया। भगवान् के शरीर के सुन्दर अंग उनके शरीर की सुन्दरता को योगदान दे ले रहे थे।

स्वागतेनाभिनन्द्याथ पादौ भगवतो बलिः ।
अवनिज्यार्चयामास मुक्तसङ्गमनोरमम् ॥ २७॥

### शब्दार्थ

सु-आगतेन—स्वागत के शब्दों से; अभिनन्द्य—स्वागत करके; अथ—इस प्रकार; पादौ—दोनों चरणकमल; भगवतः—भगवान् के; बलिः—बलि महाराज ने; अवनिज्य—धोकर; अर्चयाम् आस—पूजा की; मुक्त-सङ्ग-मनोरमम्—मुक्तात्माओं को सुन्दर लगने वाले भगवान् को।

**इस प्रकार मुक्तात्माओं को सदैव सुन्दर लगने वाले भगवान् का समुचित स्वागत करते हुए बलि महाराज ने उनके चरणकमलों को धोकर उनकी पूजा की।**

तत्पादशौचं जनकल्मषापहं
स धर्मविन्मूर्ध्न्यदधात्सुमङ्गलम् ।
यद्देवदेवो गिरिशश्चन्द्रमौलिर्
दधार मूर्ध्ना परया च भक्त्या ॥ २८ ॥

### शब्दार्थ

तत्-पाद-शौचम्—भगवान् के चरणकमलों को धोने से प्राप्त जल; जन-कल्मष-अपहम्—जनता के समस्त पापों के फलों को धो डालने वाला; सः—उसने ( बलि महाराज ने ); धर्म-वित्—धर्म से पूर्णतया ज्ञात; मूर्ध्नि—सिर पर; अदधात्—धारण किया; सु-मङ्गलम्—सर्वकल्याणकारी; यत्—जो; देव-देवः—देवताओं में श्रेष्ठ; गिरिशः—शिवजी; चन्द्र-मौलिः—ललाट पर चन्द्रमा का चिह्न धारण करने वाला; दधार—धारण किया; मूर्ध्ना—सिर पर; परया—परम; च—भी; भक्त्या—भक्तिपूर्वक।

**देवताओं में सर्वश्रेष्ठ, ललाट पर चन्द्रमा का चिन्ह धारण करने वाले शिवजी विष्णु के अँगूठे से निकलने वाले गंगाजल को अपने सिर पर भक्तिपूर्वक धारण करते हैं। धार्मिक सिद्धान्तों को जानने वाले होने के कारण बलि महाराज को यह ज्ञात था; फलस्वरूप शिवजी का अनुसरण करते हुए उन्होंने भी भगवान् के चरणकमलों के प्रक्षालन से प्राप्त जल को अपने सिर पर रख लिया।**

**तात्पर्य :** शिवजी गंगाधर कहलाते हैं अर्थात् वे जो अपने सिर पर गंगा जल धारण करते हैं। शिवजी के ललाट पर अर्धचन्द्र का चिह्न लगा रहता है। फिर भी भगवान् को परम आदर प्रदान करने के लिए शिवजी ने इस चिह्न के ऊपर गंगाजल को धारण कर लिया। इस उदाहरण का पालन हर एक को, अथवा कम से कम हर भक्त को करना चाहिए क्योंकि शिवजी महाजनों में से एक हैं। इसी प्रकार बलि महाराज भी बाद में महाजन बन गये। एक महाजन दूसरे महाजन का अनुसरण करता है और महाजन परम्परा का अनुगमन करने से मनुष्य आध्यात्मिक चेतना में प्रगति कर सकता है। गंगाजल पवित्र होता है क्योंकि यह भगवान् विष्णु के चरण के अँगूठे से निकलता है। बलि महाराज ने वामनदेव के चरणकमलों को प्रक्षालित किया और जिस जल से उन्होंने प्रक्षालन किया वह गंगाजल के तुल्य बन गया। अतएव समस्त धर्मों के ज्ञाता बलि महाराज ने शिवजी का अनुसरण करते हुए इस जल

को अपने सिर पर लगा लिया।

श्रीबलिरुवाच
**स्वागतं ते नमस्तुभ्यं ब्रह्मन्किं करवाम ते ।**
**ब्रह्मर्षीणां तपः साक्षान्मन्ये त्वार्य वपुर्धरम् ॥ २९ ॥**

### शब्दार्थ

श्री-बलिः उवाच—बलि महाराज ने कहा; सु-आगतम्—स्वागत है; ते—आपका; नमः तुभ्यम्—मैं आपको नमस्कार करता हूँ; ब्रह्मन्—हे ब्राह्मण; किम्—क्या; करवाम—हम कर सकते हैं; ते—आपके लिए; ब्रह्म-ऋषीणाम्—ब्रह्मर्षियों की; तपः—तपस्या; साक्षात्—प्रत्यक्ष; मन्ये—मानता हूँ; त्वा—तुमको; आर्य—हे श्रेष्ठ; वपुः-धरम्—साकार।

**तब बलि महाराज ने वामनदेव से कहा : हे ब्राह्मण! मैं आपका हार्दिक स्वागत करता हूँ और आपको सादर नमस्कार करता हूँ। कृपया बतायें कि हम आपके लिए क्या करें? हम आपको ब्रह्मर्षियों की तपस्या का साकार रूप मानते हैं।**

**अद्य नः पितरस्तृप्ता अद्य नः पावितं कुलम् ।**
**अद्य स्विष्टः क्रतुरयं यद्भवानागतो गृहान् ॥ ३० ॥**

### शब्दार्थ

अद्य—आज; नः—हमारे; पितरः—पितरगण; तृप्ताः—तृप्त; अद्य—आज; नः—हमारे; पावितम्—पवित्र हुए; कुलम्—पूरा परिवार; अद्य—आज; सु-इष्टः—भलीभाँति सम्पन्न; क्रतुः—यज्ञ; अयम्—यह; यत्—क्योंकि; भवान्—आप; आगतः—पधारे हैं; गृहान्—हमारे घर में।

**हे प्रभु! आप कृपा करके हमारे घर पधारे हैं अतः मेरे सारे पूर्वज संतुष्ट हो गये, हमारा परिवार तथा समस्त वंश पवित्र हो गया और हम जिस यज्ञ को कर रहे थे वह आपकी उपस्थिति से अब पूरा हो गया।**

**अद्याग्नयो मे सुहुता यथाविधि**
**द्विजात्मज त्वच्चरणावनेजनैः ।**
**हतांहसो वार्भिरियं च भूरहो**
**तथा पुनीता तनुभिः पदैस्तव ॥ ३१ ॥**

### शब्दार्थ

अद्य—आज; अग्नयः—अग्नि; मे—मेरे द्वारा सम्पन्न; सु-हुताः—भलीभाँति आहुति डाली गई; यथा-विधि—शास्त्रीय आदेशानुसार; द्विज-आत्मज—हे ब्राह्मण पुत्र; त्वत्-चरण-अवनेजनैः—जिसने आपके चरणकमल धोये हैं; हत-अंहसः—सारे पापों के फलों से पवित्र हो गये हैं, जो; वार्भिः—जल के द्वारा; इयम्—यह; च—भी; भूः—पृथ्वी पर; अहो—ओह; तथा—और; पुनीता—पवित्र; तनुभिः—छोटे; पदैः—चरणकमलों के स्पर्श से; तव—आपके।

**हे ब्राह्मणपुत्र! आज यह यज्ञ-अग्नि शास्त्रादेशानुसार प्रज्ज्वलित हुई है और आपके**

पादप्रक्षालित जल से मैं अपने पापकर्मों के सभी फलों से मुक्त हो गया हूँ। हे स्वामी! आपके लघु चरणारविन्द के स्पर्श से समग्र जगती-तल पवित्र हो गया है।

यद्यद्वटो वाञ्छसि तत्प्रतीच्छ मे
त्वामर्थिनं विप्रसुतानुतर्कये ।
गां काञ्चनं गुणवद्धाम मृष्टं
तथान्नपेयमुत वा विप्रकन्याम् ।
ग्रामान्समृद्धांस्तुरगान्गजान्वा
रथांस्तथार्हत्तम सम्प्रतीच्छ ॥ ३२ ॥

### शब्दार्थ

यत् यत्—जो जो; वटो—हे ब्रह्मचारी; वाञ्छसि—चाहते हो; तत्—वह; प्रतीच्छ—ले सकते हो; मे—मुझसे; त्वाम्—तुम; अर्थिनम्—इच्छा रखने वाले; विप्र-सुत—हे ब्राह्मण पुत्र; अनुतर्कये—मैं मानता हूे; गाम्—गाएँ; काञ्चनम्—सोना; गुणवत् धाम—सज्जित घर; मृष्टम्—सुस्वादु; तथा—और; अन्न—अनाज; पेयम्—पेय पदार्थ; उत—निस्सन्देह; वा—अथवा; विप्र-कन्याम्—ब्राह्मण की पुत्री; ग्रामान्—ग्रामों; समृद्धान्—समृद्ध; तुरगान्—घोड़ों; गजान्—हाथियों; वा—अथवा; रथान्—रथों को; तथा—और; अर्हत्-तम—परम पूज्य; सम्प्रतीच्छ—ले सकते हो।.

हे ब्राह्मणपुत्र! ऐसा प्रतीत होता है कि आप यहाँ मुझसे कुछ माँगने आये हैं। अतएव आप जो भी चाहें मुझसे ले सकते हैं। हे परम पूज्य! आप गाय, सोना, सज्जित घर, स्वादिष्ट भोजन तथा पेय, पत्नी के रूप में ब्राह्मण कन्या, समृद्ध गाँव, घोड़े, हाथी, रथ या जो भी इच्छा हो मुझसे ले सकते हैं।

*इस प्रकार श्रीमद्भागवत के अष्टम स्कन्ध के अन्तर्गत ''भगवान् वामनदेव: वामन अवतार'' नामक अठाहरवें अध्याय के भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुए।*